International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 Sept – Oct 2022

तिनका तिनके पास' उपन्यास में स्त्री विमर्श

डॉ. शैलजा धोंडीराम गवळी
महाबळेश्वर।
DOI- 10.5281/zenodo.14228123

सारांश:

आजकल हम देखते हैं कि समाज में अलग-अलग जाति के लोग अपनी-अपनी बिरादरी पर होने वाले अन्याय-अत्याचार का विरोध करने लगे हैं। सर्वहारा वर्ग हो या पूँजीपति कोई किसीसी कम नहीं समझते और कोई किसी का अन्याय नहीं सह नहीं सकते। यह जो परिवर्तन है, वह साहित्य की वजह से है। कहते हैं कि जो समाज में घटित होता है उसका असर साहित्य पर दिखाई देता है। लेखक अपने समाज चित्रण साहित्य में करता है। यही पढ़कर पाठकों में अपने-आप परिवर्तन तथा खुद को बदलने की ताकत आ जाती है। इसी के चलते विभिन्न विभिन्न विमर्शो का जन्म हुआ है। दलितों पर होने वाले अन्याय-अत्याचार उनका जीवन जीने के लिए संघर्ष, उनके द्वारा इसका किया जाने वाला विरोध दलित विमर्श, इसी प्रकार किसानों का समाज में होने वाला शोषण, उनको सहनी पड़ने वाली पीड़ा किसान विमर्श, किन्नर जीवन की त्रासदी किन्नर विमर्श, आदिवासियों का जीवन-संघर्ष आदिवासी विमर्श हैं। इसी प्रकार नारी पर समाज में होने वाले अन्याय-अत्याचार, समय के साथ नारी जीवन में आया परिवर्तन तथा नारी जीवन से संबंधित सर्वांगीण चित्रण 'नारी विमर्श' है।

प्रस्तावना:

भारतीय संस्कृति में नारी की पूजा होती थी, लेकिन आज तो उसे भोग वस्तु मात्र समझा जाता है। पहले भी यह था लेकिन उसका स्वरूप अलग था। पुरुष को अनेक विवाह करने की अनुमति थी। विशेषतः राजा-महाराजाओं को अनेक रानियाँ होती थी। बेटी ब्याहते समय उसे सिख दी जाती है कि वो जहाँ जा रही है वही उसका सबकुछ है। आगे अपना घर-बार सँभालने के लिए उसे न जाने क्या-क्या करना पड़ता है। इसी नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण अनामिका जी ने अपने साहित्य किया है। इसमें एक वेश्या भी है। वेश्याओं के संदर्भ में लोगों की सोच अच्छी नहीं होती लेकिन लेखिका ने उसी स्त्री को अलग नजरिये से देखा है। उनके असली रूप को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। लेखिका कहना चाहती है कि वेश्या भी किसी की माँ, बहन होती है। उसका दिल भी ममता से भरा होता है, वह भी एक स्त्री है।

उपन्यासकार अनामिका जी ने 'तिनका तिनके पास' उपन्यास में अवंतिका और तारा के जीवन-संघर्ष को चित्रित किया है। यह चित्रण इतना मार्मिकता और गंभीरता से किया है कि पढ़ते समय आँखों में आँसू आ जाते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में अवंतिका जी अपने पति से किस प्रकार प्रताड़ित है यह बताया गया है। बच्चे जब छोटे थे तब पति स्पंदन कक्कड़ बात-बात पर उसे पीटते थे। कई बार पति ने उन्हें घर छोड़कर रात बाहर गुजारने के लिए मजबूर किया। मायके में भी उनकी कुछ चलती नहीं थी। वहाँ पर भाभी का राज आ गया था। वहाँ भी वह पराई बन गई थी। भाई के बच्चे भी हाँ-हूँ की भाषा बोलने लगे थे। यहाँ लेखिका कहती है-"अपना मन चटाई की तरह समेटकर कोने में टिका लेने की कला औरतों की तो साधी हुई है।"[1] इसप्रकार नारी को हमेशा अपना मन मारकर जीना पड़ता है।

हमारे समाज में बेटी का रिश्ता मायके से बहुत अटूट होता है। दुख में मायके की चिंता तो बेटी को सताती ही है लेकिन सुख में भी वह अपने बाबूल को याद

करती है। हमारे समाज में स्त्री-पुरुष को लेकर जो भिन्नता या विषमता है उसके बारे में बताया गया है कि पुरुष अपनी पारिवारिक समस्या हो या भावनात्मकता से जुड़ी बातें हो अपनी काम की जगह या बाहर बता सकता है लेकिन स्त्री ने चाहा तो भी बता नहीं सकती। अगर बताया भी तो उसका गलत फायदा उठाने वाले हजार पुरुष तैयार होते हैं। लेखिका यहाँ कहना चाहती है-"केवल शांति और खुशहाली पाने के लिए पत्नी एक यंत्र के समान कितने दिन रह सकती है।"[2] इस प्रकार लेखिका ने नारी जीवन घुटन और पीड़ा को लेखिका व्यक्त किया है। पुरुष जब बाहर से थका, परेशान घर आता है तो पत्नी उसके सुकून का सारा खयाल रखती है लेकिन पुरुष द्वारा नारी मन का खयाल नहीं रखा जाता। पुरुष दूसरों से बाहर कामरेड की सारी बातें कर सकता है लेकिन जो उसके घर को सँभालती है, बच्चों को जन्म देती है, उसके साथ शांति से बातें नहीं कर सकता क्योंकि वे अपनी पत्नी को परंपरागत पत्नी समझता है।

आगे चलकर लेखिका एक बात पर गौर करने के लिए मजबूर करती है कि समाज में किसी दलित स्त्री के गर्भ में सवर्णों की संतान पल रही हो तो उस दलित स्त्री ने वह संतान उसी के मुँह पर मार आना चाहिए। क्योंकि आगे उस बच्चे का भविष्य में न जाने कितने गोते खाते जीवन की नैया पार करनी पड़ती है। यहाँ लेखिका कहना चाहती है-"जल्दी ही वे चमड़ी कैंसर से या टीबी से मर जाते थे!"[3] माँ-बाप अपनी गरीबी से जूझते हुए, नन्हें-मुन्हे बच्चों को जिनके अभी दूध के दाँत भी नहीं गिरे उन्हें जानलेवा खतरों से खेलने के लिए, पैसा कमाने के लिए भेज देते हैं। वे दियासलाई, पटाखों के कारखानों में मजदूरी करते नजर आते हैं। सच कहे तो यह बाल-विमर्श का मुद्दा मजबूती से उठाना चाहिए। यह जो सब बच्चे हैं आगे चलकर देश का भविष्य बनाने वाले है। लेखिका भगवान की दी हुई अद्‌भूत शक्ति को, वरदान को बहुत खुबसूरती से प्रस्तुत करती है। हरएक माँ को अपना बच्चा प्यारा होता है। बड़े प्यार से माँ उसका पालन-पोषण करती है। माँ के इस मातृत्व भावना को चित्रित करती हुई लेखिका लिखती है-"छत से टपक रही है, दूध के आवेग से मेरी छाती भी। रंध्र-रंध्र बींधती हुई नन्हीं बूँदे...कितने मनोयोग और धीरज से...."[4] सच में कितना अद्‌भूत रिश्ता होता है माँ-बच्चों का? ईश्वर ने कैसी महिमा निर्माण की है। प्रस्तुत उपन्यास में तारा नामक स्त्री है जो बिना शादी किए ही गर्भवती है। वह ऐसी स्त्री है जिसका बच्चा जन्म लेने से पहले ही मर जाता है। वह बच्चा भगवान को प्यारा हो जाता है। यह दुःख दुनिया की न जाने कितनी माताओं का हैं। हम देखते है कि उस गर्भवती स्त्री की प्रसव के पहले देखभाल नहीं होती। उसका खयाल नहीं रखा जाता। उस समय जो पीड़ा होती है वह संबंधित पीड़ा भुगतनी वाली स्त्री ही जानती है। स्त्री को इस संसार में कितनी कठिनाईयाँ, दुःख सहना पड़ता है और उसे किस प्रकार पुरुष संस्कृति में उपहास बना दिया जाता है इसका बहुत अच्छे तरीके से चित्रण लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से किया है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि नारी को अपने जीवन में अनेक पीड़ाओं को सहना पड़ता है। 'तिनके तिनका पास' प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखिका अनामिका ने नारी जीवन की अलग-अलग पीड़ाओं को प्रस्तुत किया है। एक वेश्या को अपनी जीवन में कितनी पीड़ाओं को भुगतना पड़ता है, कुँआरी माताओं को अपने जीवन में कितना दुख भुगतना पड़ता है आदि बातों का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया है। साथ ही एक माता के रूप में, पत्नी के रूप में जिम्मेदारी निभाते समय एक स्त्री को कितनी कसरत करनी पड़ती है इन सभी बातों पर भी प्रकाश डाला है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न पहलु सामने आते हैं।

संदर्भ:

1. अनामिका, तिनका तिनके पास, पृ.86
2. वही, पृ. 101
3. वही, पृ. 116
4. वही, पृ. 158